707

दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट–5

(प्रश्न पत्र–I)

DTVF / OPT-24 **HL-2405**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक* : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): Payal Gwalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 5, 9 Aug. 2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

0	8	2	2	5	9	1

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______________ **टिप्पणी** (Remarks): ______________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) हिन्दी भाषा का क्षेत्र

हिन्दी भाषा का क्षेत्र से आशय ऐसे क्षेत्र से है जहाँ हिन्दी भाषा का प्रयोग सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक क्षेत्रों में संवाद और और कार्यों के लिये होता हो।

हिन्दी भाषा के प्रयोग के आधार पर सम्पूर्ण भारत का कुछ वर्गों मे विभाजन है।

प्रथम भाषा क्षेत्र - ऐसे क्षेत्र जहाँ हिन्दी का प्रयोग सोचने-समझने-बोलने-लिखने आदि के रूप मे होता है। इन क्षेत्रों मे उत्तर भारत के राज्य आते है। उदा०- उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान, उत्तराखण्ड, हिमाचलप्रदेश, हरियाणा, पंजाब आदि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

द्वितीय भाषा के रूप में :- ऐसे राज्य जहाँ हिन्दी का प्रयोग केवल लिखने और कुछ ही क्षेत्रों में होता है। न कि बोलचाल के रूप में।

उदाहरण - महाराष्ट्र (मराठी), गुजरात (गुजराती) ओडिशा (ओडिया)

तृतीय भाषा क्षेत्र - ये ऐसे राज्य हैं जहाँ हिन्दी का प्रयोग नहीं किया जाता है उदा० तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक। सिर्फ अन्य राज्य से प्रवासित लोग ही हिन्दी का प्रयोग करते हैं।

इसके अलावा फिजी, सूरीनाम, मारीशस आदि देशों में हिन्दी का प्रयोग किया जाता है।

वहीं दूसरी ओर जर्मनी, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि में केवल अध्यापन हेतु हिन्दी का प्रयोग होता है।

इस प्रकार हिन्दी भाषा का क्षेत्र काफी विस्तृत है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने स्वातंत्रता आंदोलन मे बढ़चढ़कर हिस्सा लिया और हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

(1) बाल गंगाधर तिलक मुख्यत: स्वदेशी के समर्थक थे इसलिये उन्होंने राष्ट्रभाषा के रूप में हमारे देश की भाषा हिन्दी का समर्थन किया।

उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा -

"हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो राष्ट्रभाषा की पदाधिकारी है। और राष्ट्रभाषा बनने योग्य है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(२) उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से राष्ट्रभाषा का प्रसार किया।
उदाहरण- हिन्दी केसरी महत्वपूर्ण साप्ताहिक पत्रिका

(३) उन्होंने राष्ट्रीय लिपि के रूप में देवनागरी लिपि और राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी भाषा का समर्थन किया।

(४) उन्होंने राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया और लोगों से आग्रह किया किया कि राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का समर्थन करें।

इस प्रकार तिलक ने जीवन भर हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के अथक प्रयास किये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी भाषा के मानकीकरण मे 'आधुनिक काल के द्विवेदी युग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिन्होने भारतेंदु युग के ब्रजभाषा और खड़ी बोली के प्रयोग के द्वंद्व को समाप्त कर, हिन्दी भाषा की खड़ी बोली के मानक रूप को स्थापित करने का प्रयास किया

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान

(1) संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी-फारसी के हिन्दी प्रचलित शब्दों को मानक हिन्दी में स्वीकार किया।

(2) विदेशी शब्दों का उच्चारण और वर्तनी हिन्दी के अनुरूप करने का प्रयास किया

उदा० एकेडमी → अकादमी

(3) परसर्गों को ~~सर्वनाम~~ संज्ञा से अलग लिखने का प्रयास किया

उदा० ~~उसीने~~ - ~~उसने~~ रामने → राम ने

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) परसर्ग को सर्वनाम से सटाकर लिखने का प्रयास
उदा० उस ने → उसने

(5) संस्कृत, फारसी, अरबी के कई पुल्लिंग शब्दों का हिन्दी मे स्त्रीलिंग के रूप में प्रयोग
उदा० आत्मा, वायु

(6) बहुवचन बनाने की प्रक्रिया में सुधार
उदा० सुरमे → एक सुरमा, दो सुरमा
राजे → एक राजा, दो राजा

(7) क्रिया के आवै, जावै, लीजै, कीजै रूपों को छोड़ दिया

(8) यह सुझाव दिया कि केवल आकारांत विशेषण विकारी माने जाये, लिंग-वचन सापेक्ष
उदा० काला लड़का → काली लड़की

इस प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी के मानकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नाथ साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नाथ साहित्य का विकास

मुख्यत: आदिकाल में 1100 ई से 1350 ई. के प्रारंभिक दौर मे माना जाता है। जिसके प्रमुख साहित्यकार :- गोरखनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, आदि माने जाते हैं।

इस काल मे मुख्यत: अपभ्रंश, अवहट्ट, नागर अपभ्रंश, पुरानी हिन्दी का प्रयोग किया जाता था परन्तु कुछ रचनाओं मे खड़ी बोली का प्रारंभिक रूप दिखाई देता है।

खड़ी बोली की ध्वनि विशेषता के रूप में :- न → ण का प्रयोग

सर्वनामव्यवस्था - नौ, इक्क, बारह जैसे संख्यावाचक सर्वनामो का प्रयोग

- घुम्मकड़ी प्रवृत्ति के कारण भाषा का मिश्रित रूप।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चर्पटीनाथ का दोहा -

जाणै के अजाणि होय, बात तू ले पछाणि
चेला हो द्वआ लाभ होइगा, गुरु होइयो
घाणै

खड़ी बोली - न के स्थान पर ण

इसी प्रकार एक और दोहे में
संख्यावाचक विशेषण और आकारान्तता
के दर्शन होते हैं।

चौरासी जातरि आगै नाचे, पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन लै जोगी खेलै, जब अंतहि बसै भण्डारा।

एकारान्तता

इस प्रकार खड़ी बोली का नाथ
साहित्य में सीमित प्रयोग दिखाई
देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देवनागरी लिपि को संविधान में भारत की राष्ट्रलिपि के रूप में समाहित किया गया। परन्तु इसके अंकों के स्थान पर अंतर्राष्ट्रीय अंकों के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया।

देवनागरी लिपि के कम्प्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न -

(1) तिलक द्वारा तिलक फान्ट का आविष्कार किया गया।

(2) हिन्दी भाषा के वर्णों पर आधारित की-बोर्ड का आविष्कार किया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(i) यूनीकोड नामक साफ्टवेयर का आविष्कार देवनागरी लिपि के कम्प्यूटरीकरण मे महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

(ii) देवनागरी लिपि मे वर्णों और मात्राओं के लिये विभिन्न प्रकार के संशोधित की-बोर्ड और साफ्टवेयर का आविष्कार किया गया।

इस प्रकार, देवनागरी लिपि के अंतरलिप्यिकरण हेतु कम्प्युटर सुलभ हिंदी भाषा की देवनागरी लिपी का प्रयास आज भी जारी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'ब्रज' और 'अवधी' बोलियों के पारस्परिक संबंध पर नातिदीर्घ निबंध लिखिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रज और अवधी दोनों ही बोलियाँ भक्तिकाल में साहित्य रचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बोलियाँ रही हैं।

दोनों का प्रयोग भक्ति करने के लिये किया गया है।

शौरसेनी अपभ्रंश → ~~ब्रजभाषा~~ पश्चिमी हिन्दी → ब्रजभाषा → कृष्ण भक्ति काव्यधारा

अर्धमागधी अपभ्रंश → पूर्वी हिन्दी → अवधी → रामभक्ति काव्य धारा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रजभाषा और अवधी में संबंध

① दोनों में
ण के स्थान पर न का प्रयोग

② व → ब
~~ख → ख~~ श → स
ष → ख

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मानक हिन्दी में वर्तमान में सिर्फ दो वचनों (एकवचन और द्विवचन) को स्वीकार किया गया है जबकि संस्कृत में तीन वचनों का प्रयोग होता था (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन)

हिन्दी की व्याकरणिक संरचना।

- पद संरचना।
- कारक व्यवस्था।
- वाक्य संरचना।
- विकारोत्पादक तत्व
  - लिंग
  - वचन
  - काल
  - वाच्य
  - भाव

वचन का प्रयोग सामान्यतः संज्ञा, सर्वनाम की संख्या, मात्रा दर्शाने के लिये किया जाता है।

उदा० लड़का जाता है → लड़के जाते हैं।

लड़का ↓ एक लड़का; लड़के ↓ बहुत सारे लड़के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानक हिन्दी की वचन संरचना की विशेषताएँ

(1) पुल्लिंग आकारान्त को बहुवचन बनाने के लिये प्रायः एकारान्त कर दिया जाता है।

उदा॰ लड़का → लड़के

(2) स्त्रीलिंग एकवचन का बहुवचन बनाने के लिये कई प्रत्ययों का प्रयोग

उदा॰
इनि → जेठ → जेठानी
ईयाँ → मिठाई → मिठाईयाँ
आइन → ठाकुर → ठकुराइन
ए → बहन → बहने

इसके बावजूद वचन संरचना में कुछ समस्याएँ भी हैं।

उदा॰- बिहार में एकवचन में - हम
बहुवचन में - हम लोग

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाषः 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेलः help@groupdrishti.in :: वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- आदरणीय व्यक्तियों के साथ बहुवचन के प्रयोग को स्वीकारा गया है।

उदा० गांधीजी अमेरिका जायेंगे।

जबकि सामान्य - राम अमेरिका जाएगा

- कुछ शब्द हमेशा बहुवचन होंगे
उदा० - प्राण,
- कुछ हमेशा एकवचन ही होंगे।
- आकारांत शब्द लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तनशील होकर बहुवचन बनाएंगे।
उदा० लड़का - लड़के

इस प्रकार कई सुधारों के बाद हिन्दी की वचन संरचना मानक रूप में पहुंच चुकी है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-संरचना से जुड़ी समस्याओं पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्तमान मे मानक हिन्दी मे केवल दो ही लिंग - पुल्लिंग और स्त्रीलिंग को स्वीकार किया गया है। नपुसकलिंग के शब्दों को पुल्लिंग और स्त्रीलिंग मे ही समाहित कर दिया गया है।

परन्तु आज भी लिंग संरचना अपने मानक रूप मे पहुँचने से बाधित है क्योंकि इसके प्रयोग में कुछ समस्याएँ है।

लिंग संरचना से जुड़ी समस्याएँ

① लिंग निर्णय की समस्या मूलत: प्राकृतिक और लिंग निरपेक्ष शब्दो के विषय मे

उदा० प्राण, वायु आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(२) पदनामों के संबंध में लिंग के प्रयोग को लेकर आज भी समस्या है।

उदा० राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, आदि।

(३) देशज और विदेशज शब्दों के साथ लिंग निर्णय की समस्या।

उदा० डॉक्टर (विदेशज शब्द)
स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों के लिये

(४) व्याकरण संबंधी समस्या - जैसे पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का वचन और काल के अनुसार परिवर्तित होना।

उदा० वे जाते हैं
वह जाता है। - पुल्लिंग
वह जाती है। - स्त्रीलिंग } अपरिवर्तित
लड़कियां जाती हैं - स्त्रीलिंग

परन्तु
लड़का जाता है
लड़के जाते हैं। } परिवर्तित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार लिंग व्यवस्था में आज भी समस्याएँ बनी हुई हैं।

समाधान के प्रयास

① सभी पदनामों को लिंगनिरपेक्ष और दोनों लिंगों के लिये प्रयोग की मान्यता।

② सभी प्राकृतिक वस्तुओं को सामान्यत: पुल्लिंग वर्ग में शामिल किया गया उदा० पहाड़, पर्वत, मैदान
परन्तु कुछ स्त्रीलिंग में- जैसे नदी, झील

इस प्रकार लिंग संरचना को मानक रूप में स्थापित करने के प्रयास वर्तमान में भी जारी हैं। इस प्रकार सीमित समस्याओं के साथ आज लिंग व्यवस्था समझने योग्य हो गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) अखिल भारतीय काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा के विस्तार पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भक्तिकाल मे ब्रजभाषा की विशेषताओं जैसे - अलंकारिकता, श्रृंगारिकता और लचीलेपन ने ब्रजभाषा को एक अखिल भारतीय काव्यभाषा के रूप मे स्थापित किया।

अत: ब्रजभाषा का प्रयोग केवल ब्रज क्षेत्र मे ही नहीं अपितु भारत के अधिकांश क्षेत्रों मे काव्यभाषा के रूप मे हुआ।

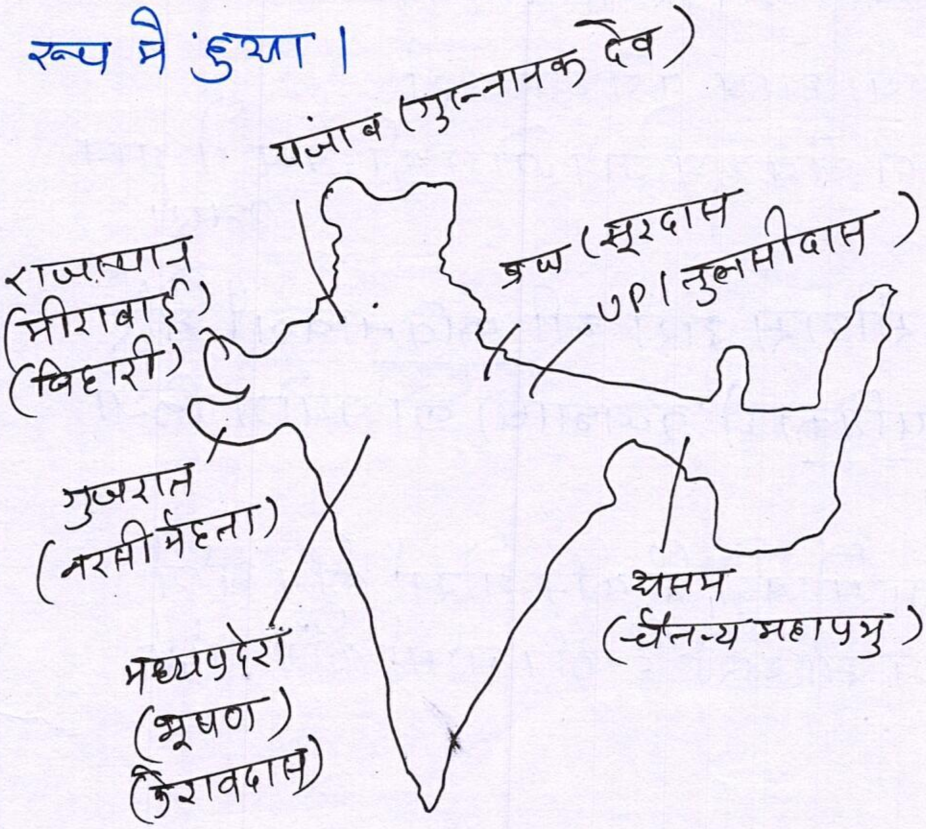

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसलिये कहा जाता है -

ब्रजभाषा हेत ब्रजवास ही न अनुमानौं
ऐसे ऐसे कविन की बोली है सो जानिये।

अत: ब्रजभाषा ने काव्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और अखिल भारतीय काव्यभाषा बनी।

1) सूरदास द्वारा ब्रजभाषा का प्रयोग सर्वश्रेष्ठ रूप में किया है जिसने अन्य कवियों को प्रेरणा दी।

आयो घोष बड़ो व्यापारी
लादी खेप गुन ज्ञान जोग की, ब्रज में आन उतारी

२) तुलसीदास द्वारा भी कवितावली और विनयपत्रिका में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया

राम सो बड़ो है कौन मोसो कौन छोटो
राम सो खरो है कौन मोसो कौन खोटो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3) राजस्थान मे मीराबाई बाई द्वारा भक्तिकाल मे राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का प्रयोग

पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे
मैं तो अपने नारायण की आपहि हो गई
दासी रे।

इसी प्रकार रीतिकालीन बिहारी द्वारा ब्रजभाषा का सभी दोहों मे शुद्ध प्रयोग किया गया।

कहत नटत रिझत खिजत मिलत खिलत लजियात
भरे भौंहं मे करत है नैननु ही सो बात।

मध्यप्रदेश के केशवदास जो रीतिकाल के महान कवि थे, ने भी ब्रजभाषा का प्रयोग किया

जदपि सुजाति सुलच्छनि सुबरन सरस सुवृत
भूषण बिनु न बिराजई कविता बनिता मित्त

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिवाजी के दरबार मे भूषण द्वारा वीरताप्रधान काव्यों मे ब्रजभाषा का प्रयोग

तेज तम अंस मे कान्ह जीमि कंस मे
त्यो मलेच्छ वंस पर सेर शिवराज है।

गुरुनानक द्वारा पंजाब मे ब्रजभाषा का प्रयोग

केते मारि डारे औा केते चबाई डारे
केतक बगाई डारे। काली कोपी तबही।

इसी प्रकार गुजरात मे नरसी मेहता ने, और रीतिकालीन कवियो जैसे- घनानंद, पद्माकर आदि द्वारा ब्रजभाषा की आलंकारिता, कलात्मकता, शृंगार रस पूर्ण होने के कारण अपने काव्यो मे प्रयोग।

वर्तमान मे भी जगन्नाथरत्नाकर जैसे साहित्यकारो द्वारा प्रयोग जारी है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की क्रिया-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा की व्याकरणिक संरचना में क्रिया व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

हिन्दी की व्याकरणिक संरचना

- पद संरचना
  - विकारी पद
    - संज्ञा
    - सर्वनाम
    - क्रिया
    - विशेषण
  - अविकारी पद
    - क्रिया विशेषण
    - संबंधबोधक शब्द
    - संबोधन
    - विस्मयादिबोधक तत्व
- कारक व्यवस्था
- वाक्य संरचना
- लिपि वर्तनी
  - विकारोत्पादक तत्व

हिन्दी की क्रिया व्यवस्था

क्रिया – किसी भी वाक्य में काम को दर्शाने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं।

उदाहरण- राम घर जाता है।
(जाता है – क्रिया)

संज्ञा और सर्वनाम द्वारा होने वाला काम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्रिया के भेद

- अकर्मक क्रिया
- सकर्मक क्रिया

अकर्मक क्रिया — इसमें क्रिया का उद्देश्य अनुपस्थित होता है।
उदा० राम हँसा।
अतः राम किस पर हँसा अनुपस्थित।

सकर्मक क्रिया — इसमें क्रिया के होने के कारण उपस्थित होते हैं।
उदा० राम ने रावण को मारा

प्रयोग के आधार पर भेद

- मुख्य क्रिया
- रंजक क्रिया
- सहायक क्रिया
- संयोजी क्रिया

① मुख्य क्रिया - जो किसी वाक्य में मुख्य काम को दर्शाती हो

② रंजक क्रिया - जो मुख्य क्रिया की भावना में जोड़ देती है।

③ सहायक क्रिया - जो वाक्य के अंत में आती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संयोजी क्रिया – जो मुख्य क्रिया के साथ आती हो।

उदा० – राम तेजी से चलता जा रहा था और गिर पड़ा।

- चलता – मुख्य क्रिया
- जा रहा – संयोजी क्रिया
- था – सहायक क्रिया
- गिर पड़ा – रंजक क्रिया

अन्य भेद

- समापिका क्रिया
- असमापिका क्रिया

समापिका क्रिया – वह क्रिया जो वाक्य के अंत में आती हो।

उदा० राम घर जाएगा। (जाएगा – समापिका)

असमापिका क्रिया – वे क्रिया जो वाक्य के बीच में आती हो।

उदा० राम चलते-चलते थक गया। (चलते-चलते – असमापिका)

इस प्रकार हिन्दी की क्रिया व्यवस्था वर्तमान में अपने मानक रूप में पहुँच चुकी। क्रिया रूप लिंग-वचन सापेक्ष परिवर्तनीय होती है।

उदा० वे जाते है (बहुवचन), वह जाता है (पुल्लिंग), वह जाती है (स्त्रीलिंग)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सूफी काव्यधारा में प्रयुक्त अवधी की भाषिक प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भक्तिकाल मे प्रांरभिक दौर मे सूफी काव्यधारा का आगमन हुआ जिसमें सिद्ध-नाथ परम्परा के साथ ही इस्लाम का प्रभाव भी था।

प्रमुख कवि - मलिक मुहम्मद जायसी - पद्मावत

मंझन ~~कुतुबन~~ - मधुमालती

मुल्ला दाउद - चंदायन

कुतुबन - मिरगावती

अतः जायसी, कुतुबन जैसे सूफी कवियों ने अवधी भाषा का प्रयोग किया इसका सबसे महान उदाहरण मुल्ला दाउद की चंदायन या लोरिकहा है जिसमें ठेठ अवधी का प्रयोग है।

जेठ जरै जग उठै पहारा उठै बवंडर धिकै पहारा
चारिहु पवन झकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी।
(
उकारबहुला भाषा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूफी काव्यधारा की अवधी की भाषीक प्रवृत्तियाँ

① ध्वनिगत विशेषताएँ

व → ब (आवत → आबत)
श → स (कौशल्या - कौसल्या)
ष → ख (लक्ष्मण - लखन)
ण → न (पाणी - पानी)

② व्याकरणिक विशेषताएँ

- पुल्लिंग संज्ञाएं प्रायः उकारान्त (उदा० पिउ)
स्त्रीलिंग संज्ञा प्रायः इकारान्त (उदा० सखि)
- एकवचन से बहुवचन बनाने हेतु ह, हि, न्ह जैसे प्रत्ययों का प्रयोग
उदा० हाथ → हाथन्ह
भाग → भागहिं
- हि विभक्ति से सभी कारक व्यवस्था का काम चल जाता था
उदा० राजा गरवहि बोले नाहिं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- परसर्गों का विकास
  - कर्ता - 0
  - कर्म - कौं
  - करण/अपादान - से, सेंते
  - सम्प्रदान - लागि
  - संबंध - का, के, केर, केरि

- क्रिया संरचना
  - वर्तमान काल हेतु - त रूप (करत, जात)
  - भूतकाल हेतु - स रूप (चलसई)
  - भविष्यकाल हेतु - ब रूप (खाइब, सोइब)

- विशेषण व्यवस्था
  - संख्यावाचक विशेषण (एक, ग्यारह, बारह, सोलह)
  - क्रिया विशेषण

इस प्रकार सूफी काव्यधारा में भाषागत विकास हो गया था जिसका प्रभाव आधुनिक हिन्दी में भी नजर आता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'राजस्थानी हिन्दी' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अवधी' बोली का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

अमीर खुसरो आदिकाल के महान कवि रहे हैं। जिन्होंने अपने साहित्य से एक अद्वितीय स्थान प्राप्त किया। इन्होंने पहेली, मुकरी, सुखने, ढकोसला आदि काव्य रूप लिखे। साथ ही भाषा के स्तर में भी विविधता जैसे- ब्रजभाषा, अवधी और खड़ी-बोली स्थापित की।

अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

खुसरो की पहेलियों में खड़ी बोली का शुद्ध प्रयोग -

एक थाल मोती से भरा सबके सिर औंधा धरा
चारों ओर वह थाल फिरें मोती उससे एक न गिरे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार प्रेम संबंधी काव्यों में भी खड़ी बोली का स्वरूप स्पष्ट है।

खुसरो दरिया प्रेम का उल्टी वाकी धार
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार

प्रस्तुत काव्य में वाकी को छोड़ दिया जाये तो सभी शब्द खड़ी बोली के नज़र आते हैं।

इसी प्रकार खुसरो ने सूखने नामक काव्य रूप में भी खड़ी बोली का प्रयोग किया है।

घोड़ा क्यों रुका,
पान क्यों सड़ा,
फेरा न था।

उपरोक्त उदाहरणों से ज्ञात होता है कि अमीर खुसरो ने आदिकाल में भी परिनिष्ठित खड़ी-बोली का प्रयोग किया जो सभी को आश्चर्य में डालता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'कन्नौजी' बोली

कन्नौजी बोली मुख्यतः भारत के पश्चिमी राज्यों (मुख्यतः राजस्थान) मे बोली जाती है। इसका प्रमुख क्षेत्र कान्यकुब्ज (फर्रुखाबाद) के नाम से इसका नाम कन्नौजी रखा गया है।

शौरसेनी अपभ्रंश
↓
पश्चिमी हिन्दी
↓
- कन्नौजी
- खड़ीबोली
- हरियाणवी
- बुन्देली
- दक्खिनी हिन्दी

- अतः कन्नौजी बोली मुख्यतः शौरसेनी अपभ्रंश के अंतर्गत पश्चिमी हिन्दी उपभाषा समूह की 6 बोली है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कन्नौजी बोली की विशेषताएं

(1) पुल्लिंग शब्द उकारांत
उदा० रामु

(2) ओकारान्तता (घोरो, खोरो
औं का प्रयोग (बकरा – बौकरा)

(3) हि का लोप
उदा० चाहि → चाई

(4) अंतिम महाप्राण ध्वनि का अल्पप्राणीकरण
उदा० हाथ → हात

(5) ड, ड़ और ढ, ढ़ ध्वनियों में भेद

(6) अनुनासिकरण (पाख → पाँख)

(7) पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने हेतु
ईयाँ, आइन, ई प्रत्यय

(8) व्यंजन संयोग (बादशाह – बास्साह)

इस प्रकार कन्नौजी बोली का प्रयोग परिष्कृत रूप में किया गया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

19वीं शताब्दी में खड़ी बोली के विकास में कई कारकों ने भूमिका निभाई जैसे - फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना

- ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रचार
- ब्रिटिश शासन व्यवस्था
- पत्र-पत्रिकाओं
- सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आंदोलन
- ~~छपा~~ प्रेस का विकास

~~खड़ी बोली के विकास में प्रेस की~~

भूमिका।

1) 19वीं शताब्दी में प्रेस के विकास ने खड़ी बोली के प्रयोग को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) प्रेस के विकास से खड़ी-बोली की पत्र-पत्रिकाएँ ग्राम-जनता तक पहुँची।

उदा॰ बालकृष्ण भट्ट - हिन्दी प्रदीप
प्रतापनारायण मिश्र - ब्राह्मण

ऐसे कई खड़ी-बोली आधारित पत्र-पत्रिका लोगों तक पहुचे।

(3) ईसाई मिशनरियों में थामस कोलब्रुक ने बाइबिल का खड़ी बोली में अनुवाद कराकर, प्रेस के माध्यम से इसका सम्पूर्ण भारत में प्रचार-प्रसार किया।

(4) स्वतंत्रता सेनानियों ने भी प्रेस के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना आधारित कविताओं, भाषणों आदि का प्रसारण किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताए

ब्रजभाषा का प्रयोग मुख्यतः भक्तिकाल और रीतिकाल में काव्यभाषा के रूप में किया गया था। अतः इसके व्याकरण में मानकता के दर्शन के कारण ही इसे एक अखिल भारतीय काव्यभाषा घोषित किया गया था।

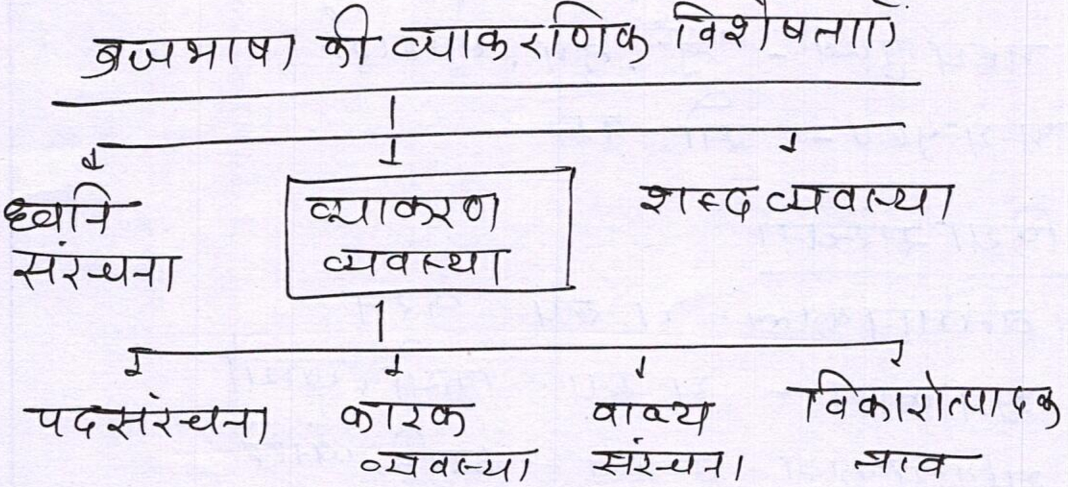

ध्वनि संरचना

① ण के स्थान पर न का प्रयोग

② औकारान्तता अर्थात ऐ और औ ध्वनि का अधिक प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कारक व्यवस्था

कर्ता - 0, ने
कर्म - को
करण - सम, सउँ, ते
सम्प्रदान - लागि
हि विभक्ति का प्रयोग सामान्यत:

सर्वनाम व्यवस्था

उत्तम पुरुष - हौं, मैं, हउँ
मध्य पुरुष - तूँ, तुम, तुम्हारौं
अन्य पुरुष - सो, वह

क्रिया संरचना

वर्तमान काल - त रूप - करत
भूत काल - य रूप - कियौं, खायौं
भविष्य काल - ह रूप - करहि, जांहि

वचन संरचना - एकवचन और बहुवचन

लिंग संरचना - पुल्लिंग और स्त्रीलिंग

इस प्रकार ब्रजभाषा के काव्य में अधिक प्रयोग ने इसके व्याकरण को मानकता प्रदान की।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग पर बहस प्रारंभ हुई। कुछ लोग हिन्दी को राजभाषा बनाना चाहते थे तो कुछ लोग अंग्रेजी को ही राजभाषा के रूप में प्रयोग के पक्षधर थे।

अतः अंग्रेजी के हिन्दी के साथ प्रयोग को वर्ष 1965 तक जारी रखने की घोषणा की गई।

दक्षिण राज्यों द्वारा हिन्दी को राजभाषा बनाने के विषय में उग्र विरोध के कारण तात्कालिक सरकार को राजभाषा अधिनियम 1963 पारित करना पड़ा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजभाषा अधिनियम 1963

① राष्ट्रपति द्वारा प्रत्येक 10 वर्षों के बाद राजभाषा आयोग की स्थापना का प्रावधान

② केन्द्र के राजकीय कार्यों में अंग्रेजी और हिन्दी के साथ-साथ प्रयोग का प्रावधान

③ हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिये सरकारी कार्यालयों द्वारा प्रशिक्षण

④ दक्षिण राज्यों के हित को ध्यान में रखते हुए त्रिभाषा सूत्र जैसे प्रावधान।

इस प्रकार राजभाषा अधिनियम 1963 ने तात्कालिक विरोध को कम करने हेतु कुछ प्रावधान किये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान तमिलनाडु में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महाराष्ट्र के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपि के संबंध पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास में 'नागरी प्रचारिणी सभा' के योगदान पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) देवनागरी लिपि की सीमाओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि को संविधान के तहत राष्ट्रीय लिपि का दर्जा प्राप्त है। जो भारत की एकमात्र राष्ट्रीय लिपि है।

परन्तु संविधान में देवनागरी लिपि के अंको को स्वीकार नही किया गया है। इसके स्थान पर रोमन अंको को स्वीकार किया गया है।

राष्ट्र लिपि होने के बावजूद देवनागरी लिपि की कुछ समस्याएं जो पाठक को इसे पढ़ने में जटिल बनाती है।

देवनागरी लिपि की सीमाएं

(1) अक्षरों की बनावट में जटिलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदा० ख, क्ष, ज्ञ जैसे शब्द लिखने में जटिल

(2) वर्णमाला बहुत लम्बी है, अक्षरों की संख्या बहुत अधिक

उदा० 59 ध्वनियाँ
12 स्वर
45 व्यंजन
2 - अयोगवाह

(3) शिरोरेखा का प्रयोग से लिखने में अधिक समय लगता

(4) वर्णों की संख्या अधिक होने से टाइपिंग करने, सीखने में समस्या होती है।

(5) देवनागरी की बारहखड़ी भी कठिन है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(6) मात्राएँ कभी बाएं, दाएं, ऊपर, नीचे लिखने से समझने में समस्या

(7) कुछ वर्ण अनावश्यक है उदा० श, ष

(8) कई वर्ण एक जैसे दिखाई देते है जिससे अंतर करना मुश्किल

उदा० रव - ख
प, म, ब इत्यादि

(9) अनुस्वार और अनुनासिक मे भ्रम

उदा- गांधी - अनुस्वार
आँखियां - अनुनासिक

(10) वर्णों और मात्राओं को मिलाकर ~~400~~ 400 से अधिक टाइपिंग की आवश्यकता

(11) देवनागरी अंक का जटिल होना

उदा० ९ - 9. ६ - 6, ३ - 3.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ii) देवनागरी लिपि की व्याकरणिक संरचना भी मानकता के स्तर तक नहीं पहुंची है।

उदा० वचन व्यवस्था
लिंग व्यवस्था

उदा० आदरसूचक शब्दों में अनुस्वार का प्रयोग बाकि में नहीं।

इस प्रकार देवनागरी लिपि में कुछ सीमाएँ अभी भी हैं परन्तु फिर भी आज यह एक सर्वस्वीकृत लिपि के रूप में विद्यमान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरपूर्वयुग में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

ब्रजभाषा का प्रयोग आदिकाल मे अमीर खुसरो द्वारा और उसके बाद भक्तिकाल और रीतिकाल मे कई कवियों द्वारा अपने साहित्य मे किया गया है।

सूरपूर्वयुग
- आदिकाल
  - सिद्ध नाथ परम्परा
  - नाथ परम्परा
  - अमीर खुसरो
  - जैन धर्म
- भक्तिकाल मे
  - सूफी काव्य धारा
  - संतकाव्य धारा
  - तुलसीदास / रामकाव्य धारा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~स्र्स~~ पूर्वयुग में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा

सिद्ध परम्परा द्वारा + नाथ परम्परा

चौ लख पातरि आगे नाचे पीछे सहज अखाड़ा ऐसो मन लै जोगी खेलौ जब अतंहि ~~बसे~~ भण्डारा।

अमीर खुसरो द्वारा - मुकरी में

मोरा मोसे श्रृंगार करावत, आगे बैठ के मान बढ़ावत
वासे चिक्कन न कोई दीसा, क्यों सखि साजन, न सखि सीसा।

इस प्रकार अमीर खुसरो ने ब्रजभाषा का सफल प्रयोग आदिकाल में ही कर दिया था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संत काव्य धारा में - कबीर द्वारा

तलफै बिनु बालम मोर जियां
दिन नही चैन रात नही निंदिया
तलफ तलफ के भोर किया।

सूफी काव्य धारा में - जायसी, कुतुबन द्वारा

जेठ जरै जग बहै लुवारा, उठै बवंडर बहै पहारा।

रामकाव्यधारा मे - तुलसीदास द्वारा कवितावली और विनय पत्रिका में

राम सो बड़ो है कौन मोसों कौन छोटो
राम सो खरो है कौन मोसों कौन खोटो

इस प्रकार सूरदास से पूर्व भी कई कवियों ने साहित्य रचना में ब्रजभाषा का प्रयोग किया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी और भोजपुरी के अंतर पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी और भोजपुरी

मुख्यत: दो भिन्न उपभाषा समूहों की है परन्तु भाषा क्षेत्र में निकटता के कारण इनमें अंतर के साथ-साथ समानता भी दिखती है।

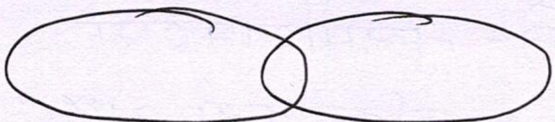

अवधी	भोजपुरी
↓	↓
अर्धमागधी अपभ्रंश	मागधी अपभ्रंश
↓	|
पूर्वी हिन्दी	बिहारी हिन्दी
|	- भोजपुरी
अवधी	- मगही
बघेली	- अंगिका
छत्तीसगढ़ी	

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी और भोजपुरी में अंतर

अवधी	भोजपुरी
① अर्धमागधी अपभ्रंश	② मागधी अपभ्रंश
② भक्तिकाल और आदिकाल में प्रयोग	② वर्तमान में बिहार में प्रयोग
④ साहित्यिक भाषा	③ लोक बोलचाल की भाषा
④ मानक बोली	④ अमानक बोली

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation